बच्चों में नागरिकता के मूल्य विकसित करना

राधिका राजनारायणन

मैं चार साल (2013-2010) के लिए नागरिक जागरूकता बाल आन्दोलन (Children's Movement for Civic Awareness - CMCA) के साथ एक स्वयंसेवक के रूप में जुड़ी थी। निजी स्कूलों के लिए शहरी स्वयंसेवकों के रूप में हमारा काम आठवीं कक्षा के बच्चों के साथ साप्ताहिक सत्र करना था। यह एक ऐसा क्लब था जिसमें बच्चे स्वेच्छा से आते थे। आमतौर पर इसमें क़रीब पन्द्रह से बीस बच्चे शामिल होते थे। हमने निम्नलिखित अवधारणाओं से उनका परिचय कराया :

- सरोकार : इसमें पहले परिवेश, पानी की बर्बादी, बिजली, कूड़ा-करकट आदि के बारे में बदलाव लाने के तरीक़ों पर व्यावहारिक गतिविधियाँ करवाईं और बाद में पर्यावरण और बाल श्रम आदि के बारे में बताया।
- सह-अस्तित्व : इसके अन्तर्गत पक्षपात और पूर्वाग्रह से बचने और विविध लोगों के साथ रहना सीखने की विधियाँ शामिल थीं।
- सहयोग : इसमें बदलाव लाने के लिए स्कूल अधिकारियों या स्थानीय सरकारी निकायों के अधिकारियों जैसे लोगों के साथ बातचीत करने की गतिविधियाँ शामिल थीं।
- आमना-सामना : इसमें बताया गया कि जब अपील का असर न हो और प्रतिनिधित्व काम न करे तो अधिकारियों का शान्तिपूर्ण तरीक़े से विरोध और सामना कैसे किया जाए।

इसके अलावा लोकतंत्र के सिद्धान्तों, अधिकारों और ज़िम्मेदारियों के बारे में भी बताया गया। इन सभी अवधारणाओं को गतिविधियों, व्यावहारिक उदाहरणों, कहानियों, फ़िल्मों आदि के माध्यम से बच्चों के मन में बिठाया गया था। इन बच्चों ने अन्य बच्चों के बीच इन विचारों के प्रति जागरूकता लाने के लिए अपने स्कूलों में इन विषयों पर अभियान भी चलाए।

कार्यप्रणाली

अधिकांश बच्चों में मुझे जो पहला व्यवहारगत लक्षण नज़र आया, वह था बोलने की अनिच्छा। मेरा अनुभव यह है कि परिवार और शिक्षकों द्वारा उन्हें 'पलटकर जवाब न देने' या प्रश्न नहीं पूछने के लिए अनुकूलित किया जाता है। उनकी इस चुप्पी को तोड़ने में कई सप्ताह लग गए।

हम जो अवधारणाएँ बच्चों तक पहुँचाना चाहते थे उन्हें सिखाने के लिए कारगर तरीक़ा था बच्चों को इन अवधारणाओं से सम्बन्धित गतिविधियों को अपने परिवार के साथ करने के लिए प्रेरित करना। उदाहरण के लिए, ब्रश करते समय नल को खुला न छोड़कर पानी की बचत करना, और ख़ुद में, अपने परिवार में, स्कूल और आस-पड़ोस में देखे गए परिवर्तनों को नोट करने के लिए एक डायरी रखना। बच्चों को इन अवधारणाओं को अन्य बच्चों को सिखाने के लिए प्रेरित करना भी एक तरीक़ा था। मैंने पाया कि इस अभ्यास द्वारा बच्चों के मन में अवधारणा बेहतर ढंग से स्थापित हुई। हालाँकि यह तरीक़ा बड़े बच्चों (CMCA क्लब सदस्यों के सहपाठियों) के बजाय छोटे बच्चों के साथ ज़्यादा बेहतर ढंग से काम करता मालूम होता है।

साथियों का दबाव

जैसा कि मैंने अपने सत्रों के दौरान पाया, मेरा यह मानना है कि बच्चे जब तेरह वर्ष के होते हैं, तब तक उनमें अच्छी और बुरी दोनों तरह की आदतें विकसित हो चुकी होती हैं। किशोरावस्था में आने वाला विद्रोहपन भी दिखने लगता है। बच्चों को अच्छे नागरिक व्यवहार के सिद्धान्तों का पालन करने के लिए प्रेरित करना एक कठिन कार्य था। उदाहरण के लिए, बिना ड्राइविंग लाइसेंस के दोपहिया वाहन नहीं चलाना। साथियों का दबाव और भीड़ का हिस्सा बनने की इच्छा उन्हें अच्छी नागरिकता के इन नियमों की अनदेखी करने के लिए प्रेरित करती है। मेरे कुछ सहकर्मियों को अपने ही बच्चों को अठारह साल की क़ानूनी उम्र से पहले मोटर वाहन चलाने से रोकने के लिए समझाने, मनाने या धमकाने में बड़ी मुश्किलात आईं।

साथियों का दबाव अन्य नकारात्मक तरीक़ों से भी काम करता है। CMCA क्लब के बच्चे यदि अपने खेल दिवस या वार्षिक दिवस पर सफ़ाई अभियान चलाने की कोशिश करते तो अन्य सहपाठियों द्वारा उनका मज़ाक उड़ाया जाता। वे बाद में उदास चेहरों के साथ मुझे बताते कि दूसरे बच्चे उन्हें चिढ़ाते हुए कहते हैं, "ओह, तुम CMCA से हो; कूड़ा-करकट ख़ुद उठाओ!"

हतोत्साहित करने वाला एक और बड़ा घटक है— किसी भी सुझाव के लिए कुछ अभिभावकों (विशेष रूप से पिता) की

कठोर प्रतिक्रिया। बच्चों को इस तरह से बड़ा किया जाता है कि वह माता-पिता से डरते हैं और इस बारे में दोबारा बात करने से सकुचाते हैं। लेकिन इन जड़ जमा चुकी आदतों या अपने अभिभावकों या दोस्तों के प्रतिरोध के बावजूद एक वर्ष के समय में ही बड़ी संख्या में बच्चों में बदलाव आया और बच्चों ने आस-पास के लोगों को भी बदलने के लिए प्रेरित किया।

बदलती आदतें और छोटी-छोटी पहल

स्कूल की मेज़ पर अपने नाम का पहला अक्षर कुरेदकर मेज़ को ख़राब करना, पानी की बर्बादी आदि जैसी छोटी-छोटी अवांछनीय आदतों के बने रहने ने साल भर की मेहनत के बाद मुझे निराशा में डाल दिया था। एक दिन मैं खिन्न हो यह सोचते हुए कक्षा के बाहर जा रही थी कि मैं बुरी तरह विफल हो गई हूँ, तभी CMCA क्लब के कुछ बच्चे दौड़ते हुए मेरे पीछे आए। "मैम, स्कूल के बग़ल में एक घर है जहाँ एक पाइप से बहुत सारा पानी बह रहा है। क्या हम जाकर उनसे इस बारे में कुछ करने को कह सकते हैं?" पहले तो मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। "हाँ ज़रूर, लेकिन विनम्रता से कहना और समूह में जाना।" उन्हें सलाह देकर मैं उनके लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। लगभग दस मिनट बाद मैंने बहते पानी को रुकते हुए और बच्चों को विजयी मुस्कान के साथ लौटते हुए देखा। पूरे जोश के साथ उन्होंने मुझे बताया कि मकान मालिक पानी का पम्प चालू कर कहीं चले गए थे। वहाँ (सौभाग्य से) एक चौकीदार था, जिसे पम्प बन्द करने के लिए मनाने में वे कामयाब रहे। वैसे तो यह घटना छोटी-सी थी, पर उनमें युवा नागरिकों के रूप में अधिक सक्रिय होने की ज़रूरत को जगाने के लिए काफ़ी थी।

बच्चों की ऐसी छोटी पहलों के और भी कई उदाहरण हैं जिनसे फ़र्क़ पड़ा।

एक शादी में विमला ने देखा कि खाना खाने के बाद लोग हाथ धोकर नल खुला छोड़ रहे थे। वह वहीं खड़ी हो गई और सभी से अनुरोध किया कि हाथ धोने के बाद नल बन्द करें।

भावना ने अपने पिता को गाड़ी चलाते समय हेलमेट पहनने के लिए मना लिया।

श्रुति ने अपनी बड़ी बहन को ड्राइविंग लाइसेंस मिलने तक स्कूटर न चलाने के लिए मना लिया।

बीबी नाज़ ने अपने दोस्त को बालकनी से एक रैपर फेंकते देखा। उसने रैपर उठाया, उसे वापस अपने दोस्त के पास ले गई और सुनिश्चित किया कि वह फिर से इधर-उधर कूड़ा न डाले।

अब्दुल ने रात भर अपना फ़ोन चार्ज करना बन्द कर दिया और अपने माता-पिता को भी ऐसा करने के लिए मना लिया। कई बच्चों ने इस तरीक़े और बिजली बचाने के अन्य तरीक़ों को अपनाकर अपने मासिक बिजली बिल में 300 रुपए तक की बचत की!

कीर्ति ने एक बच्चे को मज़दूर के रूप में काम करते और उसे पिटते हुए देखा। उसने चाइल्ड हेल्पलाइन नम्बर (जो कि उसे याद था) पर कॉल किया और जब अधिकारियों ने बच्चे को बचाया तब उसे बहुत ख़ुशी हुई।

कोमल ने अपनी माँ के लिए कपड़े का शॉपिंग बैग सिला। उसकी माँ को न केवल अपनी बच्ची की कला पर बहुत गर्व है, बल्कि अब वह ख़रीददारी के लिए केवल उसी बैग का उपयोग करती हैं। इस प्रकार प्रभावी रूप से कोमल ने कम-से-कम एक व्यक्ति को प्लास्टिक बैग का उपयोग करने से रोका।

गणेश की मूर्तियों पर इस्तेमाल किए गए ज़हरीले पेंट के जल निकायों पर होने वाले भयानक प्रभाव से चिन्तित स्वाति ने गणेश उत्सव के दौरान मिट्टी की मूर्ति का इस्तेमाल किया। उसने मूर्ति को एक बाल्टी पानी में विसर्जित किया और फिर उस पानी का इस्तेमाल बग़ीचे में किया।

सन्तोष ने गत्ते का एक डिब्बा लिया और स्कूल में स्वतंत्रता दिवस के दौरान बाँटी गई टॉफ़ियों के बिखरे रैपर इकट्ठा करने लगा।

जब अनिल घर जा रहा था, उसने देखा कि दो आदमी कचरे से भरे प्लास्टिक के थैले लेकर घूम रहे हैं। वे फुटपाथ पर कूड़ा फेंकने वाले थे। हिम्मत जुटाकर अनिल ने उन्हें कूड़ा फेंकने से रोका और कहा, "यह तुम्हारा शहर है, ऐसा मत करो।" वे लोग शर्मिन्दा लग रहे थे और कचरा लेकर चले गए। अपनी सफलता से उत्साहित होकर अनिल ने कई और लोगों को सड़क पर कूड़ा फेंकने से रोका।

CMCA क्लब के बच्चों की सबसे बड़ी उपलब्धि शायद उनके स्कूल के बाहर स्पीड ब्रेकर और चेतावनी बोर्ड का निर्माण था। उनके स्कूल के पास बहुत तेज़ गति से वाहन आते-जाते हैं। इसके लिए उन्होंने एक ट्रैफिक पुलिस इंस्पेक्टर को मनाया जिसने कहा, "तुम बच्चे ख़ुद असुरक्षित रूप से सड़क पर दुपहिया वाहन चलाते हो।" इस पर बच्चों ने गर्व से जवाब दिया, "नहीं

सर, हम CMCA से हैं! हम कभी भी दोपहिया वाहन नहीं चलाते क्योंकि हमारे पास लाइसेंस नहीं हैं।" यह सुनकर गर्व से मेरी छाती फूल गई। स्पीड ब्रेकर बनाने के लिए पहले नगरपालिका प्राधिकरण और फिर बृहत बेंगलूरु महानगर पालिका (BBMP) के साथ बातचीत करना था। बच्चों ने आवेदन को कन्नड़ में साफ़-सुथरा लिखना (इसके लिए अधिकारी से प्रशंसा मिली) सीखा और स्पीड ब्रेकर के बनने तक अधिकारियों से बार-बार अनुरोध करने के लिए उनके कार्यालय का दौरा किया।

जैसा कि मैंने पहले बताया मैंने एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात देखी कि जब इन युवा, सक्रिय नागरिकों ने प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को सलाह देना शुरू किया, उन्हें खाना बर्बाद न करना, इधर-उधर कचरा न करना आदि बुनियादी बातें सिखाईं, तो मैंने पाया कि परिणाम बड़े बच्चों की तुलना में बहुत बेहतर और तेज़ी-से आए। मैंने एक छोटे बच्चे को दूसरे से कहते सुना, "अरे, अपनी पेंसिल को कूड़ेदान के बाहर मत छीलो, फ़र्श गन्दा हो जाएगा। क्या आपने अक्का को यह कहते हुए नहीं सुना कि पेंसिल कहाँ छीलनी है?" छोटे बच्चों में शिक्षक और बड़ों को मान करने की प्रवृत्ति होती है, इसलिए जैसा वह कहें वैसा करना अच्छी नागरिकता के मूल्यों को विकसित करने में फ़ायदेमन्द हो सकता है।

चार्ल्स किंग्सले की किताब *वाटर बेबीज़* से ली गई एक बुनियादी अवधारणा को केन्द्र बिन्दु के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है : "वैसा ही करें, जैसा आप अपने साथ होता देखना चाहते हैं।" बच्चों से उनके कार्यों पर चिन्तन करवाने के लिए हमें उनसे पूछना चाहिए कि वे कैसा महसूस करेंगे। उदाहरण के लिए, अगर किसी और ने बाथरूम को गन्दा छोड़ दिया या उनके गेट के बाहर कचरा फेंक दिया। छोटे बच्चों के लिए ध्यान से करने और शिक्षकों के लिए स्कूल में चर्चा करने के लिए कुछ बुनियादी गतिविधियाँ इस प्रकार हो सकती हैं :

- ब्रश करते समय नल को बन्द रखना (और परिवार के अन्य सदस्यों को भी ऐसा करने के लिए कहना)।
- घर में ज़रूरत न होने पर पंखे या लाइट बन्द करना।
- अभिभावकों और बड़े भाई-बहनों से अनुरोध करना कि वे अपने इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को रात भर चार्ज न करें।
- यह सुनिश्चित करना कि कूड़े को अलग-अलग कर नगर निगम के कर्मचारी को सौंप दिया जाए और सड़क पर या ख़ाली जगहों पर कूड़ा न फेंका जाए।
- सड़क या फ़र्श पर मिठाई या नाश्ते के रैपर नहीं फेंकना; उन्हें केवल कूड़ेदान में ही डालना।
- घरेलू सहायक और नगर निगम के कर्मचारियों सहित सभी से इज़्ज़त से बात करना।
- गर्मियों में एक छोटे बरतन में पक्षियों के लिए पानी रखना।
- माता-पिता को घर से बाहर निकलने से पहले, ख़रीददारी के लिए कपड़े का बैग ले जाने की याद दिलाना— इसे कोविड उपयुक्त व्यवहार तक बढ़ाया जा सकता है। सभी को घर से निकलने से पहले मास्क पहनने और लौटने पर हाथ धोने के लिए याद दिलाना।
- बड़े भाई-बहनों से बिना लाइसेंस के मोटर वाहन न चलाने और दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनने का अनुरोध करना।

ऐसी कई गतिविधियों के बारे में सोचा जा सकता है। इसके अलावा छोटे बच्चों को ख़ुद को अभिव्यक्त करने और अपने अनुभवों के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करने से मिडिल स्कूल में पहुँचते-पहुँचते बच्चे और अधिक आत्मविश्वासी बन जाएँगे। जब तक यह छोटे बच्चे किशोरावस्था में पहुँचें, तब तक उनमें नागरिकता की सही प्रवृत्तियाँ और आदतें शामिल हो जाएँ।

बच्चों की पहचान छिपाने के लिए उनके नाम बदल दिए गए हैं।



राधिका राजनारायण एंडोक्रोनोलॉजी में स्नातकोत्तर हैं। उन्होंने व्यवसाय प्रबन्धन में डिप्लोमा भी लिया है। वे राडेल इलेक्ट्रॉनिक्स प्राइवेट लिमिटेड की सह-संस्थापक और निदेशक (बिक्री और विपणन) हैं। नागरिक मुद्दों और युवाओं में नागरिकता मूल्यों को विकसित करने में उनकी ख़ासी दिलचस्पी है। राधिका शास्त्रीय भारतीय संगीतकार हैं। एक वरिष्ठ वीणा वादक के रूप में उन्होंने संगीत समारोहों और रेडियो और टेलीविज़न पर कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं। वे बुज़ुर्गों की देखभाल में भी माहिर हैं और उन्हें इस क्षेत्र में दो दशकों का समृद्ध अनुभव है। उनसे radhika.r2@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी